लघुकथा

# रूकावट

सुरेश शर्मा
**Suresh Sharma**
235,क्लर्क कालोनी
इंदौर ।म.प्र.।

पापाजी,आप दादाजी बन गये हो । बडे बेटे ने अस्पताल से फोन पर शुभ समाचार दिया तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । खुशी के मारे सारा घर सिर पर उठा लिया । सौ का नोट छोटै बेटे को देते हुए बोले–छोटे,झटपट लड्डू तो ले आ ।

सौ का नोट लेकर छोटे फृर्ती से स्कूटर तक दौड पडा वह किक लगाने वाला था कि पापा तुरन्त बाहर आते हुए बोले–थोडा रूक जा छोटे,पहले अस्पताल से तेरी मां का फोन आने दे कि लडका हुआ है कि लडकी । कहीं लडकी हुई होगी तो.....?

# रूकावट

बूढा,दुबला–पतला शरीर साइकल रिक्शा चलाते हुए कभी हांफ रहा था तो कभी कंधे पर लटके हुए अंगोछे से पसीना पोंछ रहा था । जैसे ही पैडल पर उसके पांव का दबाव पडता,घुटने के नीचे की नसें उभर उठती थी ।

बाबा,इस उम्र में भी रिक्शा ढो रहे हो । कोई बेटा नही है क्या ? सहानुभूति दर्शाते हुए मैंने पूछा ।

भगवान कि किरपा से एक हट्टा कट्टा जवान बेटा है । साहेब की पैडल रोक कर उसने जवाब दिया ,मगर भूल हमसे हो गयी । उसे कालेज की पढाई करवा कर डिग्री दिलवा दी । अब वह गली–गली में डिग्री ढोता फिर रहा है और मैं उसे ढो रहा हूं ।